Indian J. Soc. & Pol. 09 (01) : 97-104 : 2022 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JANUARY 2022 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

2012 के पश्चात उत्तर प्रदेश की राजनीति में सीमान्त दल

राजेश कुमार[1]

[1]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

2014 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने सभी चुनावी सर्वेक्षणों को झुठलाते हुए उत्तर प्रदेश की लोकसभा की 80 में से 71 सीटों पर जीत प्राप्त की। भाजपा की इस सफलता में छोटे दलों के साथ गठबंधन की अहम भूमिका रही। तब पहली बार मुख्य दल और मीडिया की नजर छोटे और सीमांत दलों की ओर गया। उत्तर प्रदेश में इस समय 300 से अधिक दल सक्रिय है जिसमें से ज्यादातर छोटे और सीमांत दल ही है। इतनी ज्यादा संख्या में दलों का गठन के कारण और उत्तर प्रदेश की राजनीति पर इन दलों का प्रभाव आज प्रासंगिक हो गया है। हाशिये पर खड़े लोगों के हितों को पूरा करने में इन दलों की भूमिका और सरकार पर दबाव डालने में इन दलों का असर और राष्ट्रीय दलों द्वारा इनके महत्व की स्वीकारोक्ति आज की राजनीति का एक सच है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत करने में छोटे और सीमांत दल अहम भूमिका निभाते हैं।

KEYWORDS: *राज्य, राज्य राजनीति, राजनीतिक दल, क्षेत्रीय दल, सीमांत दल*

अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र को "जनता का जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन व्यवस्था" के रुप में परिभाषित किया है। (गाबा) आधुनिक लोकतंत्र में राजनीतिक दल जनता और शासन व्यवस्था के बीच कड़ी का कार्य करते हैं। राजनीतिक दल ही लोक और तंत्र के सेतु के रूप में आवाम की भावनाओं, आकांक्षाओं, हितों को तंत्र तक पहुंचाती है। इन्हें अपने कार्यक्रम, नीतियों और सिद्धांतों के माध्यम से परिभाषित और अभिव्यक्त भी करती है। इस प्रकार से राजनीतिक दल आधुनिक लोकतंत्र का पर्याय बन चुका है और लोकतंत्र का संचालन राजनीतिक दलों के बिना बेमानी ही माना जाता है। इस प्रकार से आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण हो गई है कि यदि वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था को दलों का, दलों के द्वारा और दलों के लिए शासन व्यवस्था कहा जाये जो अतिशयोक्ति नहीं होगा।

भारत में भी विभिन्न प्रकार के दलों का अस्तित्व है जिसे चुनाव आयोग तीन प्रकार से वर्गीकृत करता है। ये वर्ग हैं (क) राष्ट्रीय दल, (ख) राज्य स्तरीय दल और (ग) पंजीकृत (गैर–मान्यता प्राप्त) दल। चुनाव आयोग इस प्रकार का वर्गीकरण लोकसभा और विधानसभा चुनावों में प्राप्त मतो और सीटो की संख्या के आधार पर करता है। राष्ट्रीय दलों को आवंटित चुनाव चिह्न पूरे देश के लिए एक होता है, वहीं राज्य स्तरीय दलों का चुनाव चिह्न केवल उस राज्य में सुरक्षित होता है जहां से उसे राज्य स्तरीय दल के रुप में मान्यता प्राप्त है। पंजीकृत दलों को लेकर यह सुरक्षा और सुविधा नहीं है, इन दलों को चुनाव आयोग द्वारा प्रत्येक चुनाव से पहले चुनाव चिह्न आबंटित किया जाता है।

भारत में राजनीतिक दलों के गठन का इतिहास 1838 से शुरु होता है जब लैंड होल्डर्स सोसाइटी के नाम से पहली बार राजनीतिक संस्था का गठन हुआ था हालांकि इसका उदेश्य उतना व्यापक नहीं था। तब से लेकर 1885 तक विभिन्न स्तरों पर और विविध प्रकार के राजनीतिक संस्थाओं का गठन होता रहा। 28 दिसम्बर 1885 को पहली बार अखिल भारतीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण राजनीतिक दल के रुप में कांग्रेस की स्थापना हुई। ये राजनीतिक दल समाज के अलग–अलग हितों को अभिव्यक्त करते रहें। स्वतंत्रता से पूर्व इन दलों का मुख्य उदेश्य ब्रिटिश शासन से मुक्ति था जो अपनी शैली और तरीकों से प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहें।

स्वतंत्रता के पश्चात राजनीतिक दलों के गठन के उदेश्य और प्रकृति में बदलाव आया। जैसे–जैसे लोकतंत्र की जड़ें सुदृढ़ होते गई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुद्दे प्रमुख होते गये। भारतीय समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता की पृष्ठभूमि में विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दलों का गठन प्रारंभ हुआ। इनमें कई क्षेत्रीय एवं छोटे और सीमांत दल भी रहे। इस प्रवृत्ति को भारतीय लोकतंत्र के दृष्टिकोण से एक अच्छा संकेत माना गया। हालांकि कुछ नकारात्मक प्रवृत्तियां भी देखने को मिली।

उत्तर प्रदेश जनसंख्या के नजरिये से भारत का सबसे बड़ा राज्य है जहां सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विविधता समाज के प्रत्येक स्तर पर विद्यमान है। उत्तर प्रदेश की राजनीति देश की राजनीति को प्रभावित भी करती है और प्रभावित भी होती है। स्वतंत्रता के बाद से ही उत्तर प्रदेश की राजनीति का देश की राजनीति पर गहरा असर रहा है और सबसे ज्यादा प्रधानमंत्री उत्तर प्रदेश से ही बनें हैं। यही वजह

1: Corresponding Author

है जिसके कारण कहा जाता है कि देश के सत्ता का रास्ता उत्तर प्रदेश से ही होकर जाता है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश राजनीतिक रूप से भी सबसे बड़ा राज्य है जहां लोकसभा के 80, राज्यसभा के 31, विधानसभा के 403 और विधान परिषद के 100 सदस्य हैं। इस प्रकार से एक बात तो स्पष्ट है कि सत्ता के दृष्टिकोण से उत्तर प्रदेश एक अहम राज्य है। शायद यही कारण है कि प्रत्येक राजनीतिक दल का यह प्रयास रहता है कि उत्तर प्रदेश में अधिक से अधिक सफलता पायी जाए।

इस परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश के राजनीतिक दलों का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में 300 से ज्यादा संख्या में राजनीतिक दल सक्रिय हैं। इनमें से ज्यादातर छोटे और सीमांत दल है जिनका प्रभाव और जनाधार उतना व्यापक नहीं है। फिर भी इनका विशेष महत्व है और 2012 के बाद इनकी भूमिका और प्रभाव में वृद्धि की व्यापक चर्चा हुई है। इस पृष्ठभूमि में इन दलों के निर्माण के कारकों और कारणों पर अध्ययन जरूरी हो जाता है विशेषकर तब जब इतनी ज्यादा संख्या में छोटे और सीमांत दल चुनाव में सक्रिय रूप से भाग ले रहे है।

उत्तर प्रदेश में छोटे और सीमांत दल का उदय

स्वतंत्रता के पश्चात संपन्न देश के प्रथम आम चुनाव में उत्तर प्रदेश में 14 दलों ने भाग लिया था जिसमें कांग्रेस समेत 12 राष्ट्रीय दलों के साथ–साथ 2 राज्य स्तरीय दल भी थे। इस चुनाव में शामिल सभी राष्ट्रीय दलों को लगभग 78 प्रतिशत मत, राज्य स्तरीय दलों को 2 प्रतिशत और निर्दलीय को 3 प्रतिशत के आसपास मत प्राप्त हुए। (टेबुल 1) यह स्थिति नब्बे के दशक के शुरूआत तक बनी रही जिसमें राष्ट्रीय दलों का वर्चस्व बरकरार रहा। अस्सी के दशक के अंत और नब्बे के दशक के शुरूआत में जैसे–जैसे राष्ट्रीय दलों के मत प्रतिशत में कमी आती रही वैसे–वैसे राज्य स्तरीय दलों और पंजीकृत दलों के मत प्रतिशत में वृद्धि होती गयी। यह इस बात को रेखांकित कर रही थी कि राष्ट्रीय दलों का जनाधार कमजोर हो रहा था और क्षेत्रीय और छोटे एवं सीमांत दलों की लोकप्रियता और सामाजिक आधार बढ़ रहा था दूसरे शब्दों में यह इस ओर इशारा कर रही थी कि कांग्रेस समेत अन्य राष्ट्रीय दलों के समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधित्व का दावा भी कमजोर पड़ रहा था।

अस्सी के दशक में पिछड़े वर्गों में अपने सामाजिक और आर्थिक हितों को लेकर जागरूकता एवं प्रमुख राजनीतिक दलों के द्वारा इन मुद्दों के प्रति उदासीनता ने इन वर्गों को राजनीतिक रूप से संगठित होने की प्रेरणा दी। नब्बे के दशक में ही मंडल कमीशन रिपोर्ट को लागू कर दिया गया जिसके परिणाम स्वरूप पिछड़े वर्गों को सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण प्रभावी हो गया। यह एक मील का पत्थर साबित हुआ। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में इसका गहरा राजनीतिक असर हुआ। पिछड़ें वर्गों में अभूतपूर्व राजनीतिक चेतना का प्रादुर्भाव हुआ और वे अपने सामाजिक–आर्थिक मुद्दों को लेकर पहले से अधिक जागरूक हो गये। जिसका परिणाम यह हुआ कि वे इन मुद्दों के लेकर राजनीतिक रूप से संगठित होने लगे और राजनीतिक दल भी इन मुद्दों को गंभीरता से देखने लगी।

इसकी दूसरी परिणति यह हुई कि नए राजनीतिक दलों के गठन में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि होने लगी। जो टेबुल 1 से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विभिन्न हितों एवं जातिगत समूह को दृष्टिगत करते हुए ऐसे दलों का निर्माण होने लगता है। समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, अपना दल और इसी प्रकार के दलों का निर्माण इसी दौर में हुआ। अनेक छोटे–छोटे राजनीतिक दलों का निर्माण से इनकी संख्या में अचानक वृद्धि होने लगती है। जून 2021 तक चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार देश भर में राजनीतिक दलों की संख्या 2796 है। केवल उत्तर प्रदेश में ही 300 से ज्यादा राजनीतिक दल सक्रिय हैं। दिलचस्प यह है कि इसमें से सिर्फ सात राष्ट्रीय दल और दो राज्य स्तरीय दल है बाकी पंजीकृत (गैर–मान्यता प्राप्त) दल है, जिनका प्रभाव क्षेत्र तो सीमित जाति–समूहों, वर्गों या स्थानों में है।

छोटे और सीमांत दल ऐसे दलों को कहा जा सकता है जिनका असर कुछ लोकसभा और विधानसभा क्षेत्रों में सीमित होता है और जनाधार एवं प्रभाव कुछ जातियों, हित–समूहों, और वर्गों में ही प्रभावी होता है। इन दलों का असर और जनाधार राष्ट्रीय दलों एवं अन्य क्षेत्रीय दलों की तुलना में बहुत कम होता है। पिछड़े तथा उपाश्रित वर्ग और हाशिये पर खड़े लोगों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हुए स्थापित इन दलों की पहचान केवल एक–आध जाति के लोगों के दलों के रूप में ही रह जाती है। साथ ही व्यक्ति विशेष लोगों के वर्चस्व और प्रभाव के कारण इन दलों में आंतरिक लोकतंत्र का अभाव एक अलग ही विशेषता बन गयी है। स्थापना के समय तो इन दलों का दावा वंचितों के उत्थान और कल्याण को लेकर होता है लेकिन बाद में इन दलों में सामंतवादी प्रवृत्ति का उभार देखने को मिलता है। परिवार वाद इसका संभावित लक्षण हो जाता है। कभी–कभी ऐसा प्रतीत होने लगता है कि जनता के लिये नहीं अपितु जनता के नाम पर राजनीति करती है। लेकिन चुनावी राजनीति में इन दलों के महत्व के कारण इन दलों का राजनीति में हस्तक्षेप और असर बढ़ा है। एक प्रकार से यह दबाव समूह के रूप में भी कार्य करती है।

छोटे और सीमांत दलों के महत्व में वृद्धि

केवल उत्तर प्रदेश में इतनी ज्यादा संख्या में छोटे एवं सीमांत दलों का होना उत्सुकता पैदा करता है कि आखिर

क्यों? उत्तर प्रदेश की राजनीति में 2012 के बाद इन दलों की क्या भूमिका है? उत्तर प्रदेश की राजनीति में इतनी ज्यादा

संख्या में छोटे दलों का होना यहां की राजनीति में क्या प्रभाव डालती है? यह रोचक सवाल है। यह तब और ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है जब सीमांत एवं छोटे दलो का गठन में तेजी और 1993 के बाद उत्तर प्रदेश की राजनीति में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिलना तकरीबन एक ही साथ घटित होता है। यह गठबंधन किया था। इस गठबंधन ने पहली बार छोटे और सीमांत दलों के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए उसे महत्व प्रदान किया था। इससे पहले इन दलों को न तो प्रमुख दल तरजीह देते थे और न ही प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में उतनी तवज्जोह मिलती थी। भारतीय जनता पार्टी ने 2017 के विधानसभा और 2019 के लोकसभा चुनाव में भी छोटे और सीमांत दलों को महत्व देते हुए विधानसभा 2017 में सत्ता प्राप्त

सारिणी सं01

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में विभिन्न राजनीतिक दलों के द्वारा 1951 से 2017 तक प्रदर्शन

चुनाव	राष्ट्रीय दल			राज्य स्तरीय दल			पंजीकृत दल			निर्दलीय			कुल
	संख्या	मत :	सीट	संख्या	मत :	सीट	संख्या	मत :	सीट	संख्या	मत :	सीट	सीट
1951	12	78.20	413	02	2.14	02	––	––	––		19.66	15	430
1957	04	70.57	356	01	0.76	––	––	––	––		28.68	74	430
1962	06	82.21	389	––	––	––	03	5.09	10		12.71	31	430
1967	08	81.30	388	––	––	––	––	––	––		18.70	37	425
1969	07	65.94	306	02	3.55	01	17	23.41	100		7.09	18	425
1974	06	63.84	309	03	23.73	108	16	2.18	2		10.25	5	424
1977	04	82.86	409	03	0.25	00	07	0.77	00		16.13	16	425
1980	10	87.67	407	01	0.01	00	07	0.45	01		11.87	17	425
1985	07	80.12	397	03	2.29	05	02	0.78	00		16.80	23	425
1989	08	73.18	370	01	0.0	00	32	11.36	15		15.46	40	425
1991	09	81.98	398	04	9.49	12	35	1.09	02		7.44	07	419
1993	06	62.35	237	05	11.43	67	60	19.42	110		6.81	08	422
1996	07	46.25	223	06	41.60	177	62	5.63	11		6.52	13	424
2002	06	52.82	213	01	25.37	143	84	12.34	29		7.67	16	403
2007	06	56.50	279	12	30.17	108	112	6.37	07		6.97	09	403
2012	06	53.10	156	02	31.46	233	214	10.26	08		4.13	06	403
2017	06	68.38	338	02	23.60	48	294	4.22	14		2.57	03	403

स्रोत भारतीय चुनाव आयोग का वेबसाईट

स्थिति 2007 तक बनी रहती है जब पहली बार एक समय की छोटी पार्टी मानी जाने वाली बहुजन समाज पार्टी अपने दम पर बहुमत पाने में कामयाब रहती है और राष्ट्रीय दलों जैसे कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी, जो कि एक समय उत्तर प्रदेश में मजबूत मानी जाती थी, हाशिए पर चली जाती है।यही स्थिति 2012 के विधानसभा चुनाव में देखने को मिलती है जब समाजवादी पार्टी भी पहली बार अपने दम पर सत्ता प्राप्त करती है। हालांकि बहुजन समाज पार्टी और समाजवादी पार्टी को जब सत्ता प्राप्त हुई थी तब ये पार्टियां क्रमशः राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय दलों के रूप में मान्य थी।

केन्द्र की सत्ता में भी 1989 से लेकर 2014 तक राजनीतिक अस्थिरता और गठबंधन की सरकार रही। और यह परिवर्तन 2014 में तब आया जब उत्तर प्रदेश में अब तक के चुनावी इतिहास का जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए भारतीय जनता पार्टी ने अपने सहयोगियों से गठबंधन करते हुए लोकसभा की 80 में से 73 सीटो पर विजय प्राप्त करते हुए केन्द्र में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाती है। और यह सब कैसे संभव हुआ? ऐसा पहली बार हुआ था जबकि किसी राष्ट्रीय स्तर की पार्टी ने छोटे और सीमांत दलों को महत्व प्रदान करते हुए उससे की और 2019 के लोकसभा चुनाव में अपने प्रदर्शन को और बेहतर किया। तब यह जरूरी हो गया कि उत्तर प्रदेश में 2012 के बाद छोटे और सीमांत दलों का अध्ययन किया जाये।

छोटे और सीमांत दलों के निर्माण में तेजी का कारण

ऐसे तो छोटे और सीमांत दलों के निर्माण में तेजी 1989 के बाद से ही देखने को मिल रही थी। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार पूरे देश में 2796 पार्टियां है जिनमें ज्यादातर छोटे और सीमांत दल ही है जो कि चुनाव आयोग द्वारा पंजीकृत दल के रूप में मान्यता प्राप्त है। अकेले उत्तर प्रदेश में ही 300 के आसपास दल सक्रिय हैं। कुछ राजनीतिज्ञ विशेषज्ञ इन दलों की तुलना बरसाती नदियों से करते है जो सिर्फ चुनावों के समय ही दिखाई पड़ते है और ऐसा संभवतः इन दलों की कार्यशैली और तरीका देखकर कहा जाता है। कुछ दलों का कब सृजन होता है और कब विलुप्त हो जाते है पता ही नहीं चलता। लेकिन कुछ सीमांत दल राजनीति में गंभीर भूमिका का निर्वाह करते है और अपने क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय और प्रभावी होते है। आखिर क्या कारण रहे हैं कि इन दलों के निर्माण में तेजी देखने को मिली है?

एक तथ्य जो टेबुल 2 से पता चलता है कि 1989 से इन दलों के निर्माण में तेजी और राष्ट्रीय दलों के मत में गिरावट एक ही साथ घटित होता है। वहीं 1993 के बाद तो राष्ट्रीय दलों के मत में भारी कमी देखने को मिलती है और यह 50 प्रतिशत के आसपास आ जाती है। केन्द्र के साथ ही उत्तर प्रदेश में भी गठबंधन सरकारों का युग शुरू हो जाता है। जिसका स्वाभाविक परिणाम अस्थिर सरकार के रूप में होता है। इन सब के बीच छोटे और सीमांत दलों के मत प्रतिशत में बढोत्तरी देखने को मिलती है। केन्द्र और राज्य की सत्ता में इन्हें महत्व मिलने लगता है, एक और तथ्य जो देखने में आता है वह यह है कि इन दलों के मत प्रतिशत में यह वृद्धि लोकसभा की तुलना में विधानसभा में ज्यादा होता है। 2017 के विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय दलों के अलावा 187 छोटे और सीमांत दल शामिल हुए थे। (टेबुल 3)

सारिणी सं0 2

उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनावों में विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दलों के द्वारा 1951 से 2004 तक प्रदर्शन

चुनाव	राष्ट्रीय दल			राज्य स्तरीय दल			पंजीकृत दल			निर्दलीय			कुल
	संख्या	मत	सीट	संख्या	मत :	सीट	संख्या	मत :	सीट	संख्या	मत :	सीट	सीट
1951	9	87.29	84	2	1.37	0	––	––	––		11.34	2	86
1957	4	78.09	77	1	0.43	0	––	––	––		21.48	9	86
1962	6	86.43	77	––	––	–––	3	6.37	4		10.20	5	86
1967	7	78.85	76	1	4.07	1	––	––	––		17.08	8	85
1971	8	77.64	82	4	12.84	1	10	1.12	0		8.40	2	85
1977	4	94.26	85	1	0.01	0	5	0.29	0		5.44	0	85
1980	6	90.91	84	2	0.08	0	6	0.35	0		8.66	1	85
1984	6	84.37	85	3	1.56	0	1	1.24	0		12.83	0	85
1989	8	79.14	80	2	0.03	0	17	12.46	3		8.37	2	85
1991	8	84.72	83	5	8.77	1	27	1.03	0		5.48	0	84
1996	8	50.92	62	5	41.54	22	62	1.01	0		6.53	1	85
1998	7	65.08	63	5	28.94	20	54	3.19	1		2.79	1	85
1999	7	65.43	53	7	24.64	27	42	6.31	4		3.62	1	85
2004	6	59.07	38	9	32.34	39	61	4.78	2		3.81	1	80

स्रोत भारतीय चुनाव आयोग का वेबसाईट

सवाल यह है कि आखिर वे कौन से कारण हैं जो छोटे एवं सीमांत दलों को गठित करने हेतु प्रेरित करते हैं? इन दलों के दावों पर गौर करें तो एक बात उभरकर सामने आती है वह यह है कि इनमें से अधिकतर दल सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर और दबे–कुचले लोगों के लिए काम करने का दावा करती है। इन दलों का सामाजिक आधार भी जाति के आधार पर पिछड़े और कमजोर लोग है। तो फिर क्या कारण है कि सामाजिक रूप से कमजोर जातियां अपने आप को मजबूत जातियों की तुलना में राजनीतिक रूप से अधिक संगठित होने का प्रयास करती है? और सामाजिक स्तर को उठाने में यह कितना कारगर साबित होता है? ध्यातव्य है कि पिछड़े और दलितों में भी उन श्रेणी के लोग अधिक लामबंद हुए है जिनका राजनीतिक प्रतिनिधित्व कम रहा है। जैसे गैर–यादव और गैर–जाटव जातियां विशेषकर राजभर, कुरमी, कोइरी, कुशवाहा, खटिक, कुम्हार, कहार, निषाद, कानू आदि। उल्लेखनीय यह है कि एक समय बहुजन समाज पार्टी और समाजवादी पार्टी पिछड़े और दलितों की आवाज होने और उनके हितों का संरक्षक होने का दावा करती रही थी। किंतु इनके दावे और वास्तविकता में खाईं ज्यादा ही देखने में आई।

परिवारवादी और व्यक्तिवादी संस्कृति और दलों के अंदर आंतरिक लोकतंत्र का अभाव सामान्य सी बात हो गयी। जिस कारण से गुटबाजी और महत्वाकांक्षाओं के टकराव के कारण दलों में विभाजन हुआ। उदाहरण स्वरूप जब से समाजवादी पार्टी का गठन हुआ है तब से पार्टी के सर्वेसर्वा और अध्यक्ष मुलायम सिंह या इनके पुत्र अखिलेश यादव ही रहे हैं यही हाल बहुजन समाज पार्टी का रहा है और सुश्री मायावती ही पार्टी की सुप्रीमों के रूप में कार्य कर रही है। दिलचस्प यह है कि उत्तर प्रदेश में अधिकतर छोटे और सीमांत दलों का गठन इन्हीं पार्टियों की फूट से हुई है। 2017 विधानसभा चुनाव से पहले प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (लोहिया) का गठन समाजवादी पार्टी से अलग होकर ही हुआ था जो कि अखिलेश यादव और शिवपाल सिंह यादव के राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं और अहम के टकराव का ही परिणाम था। चुनाव नतीजों पर इसका गहरा असर पड़ा। और समाजवादी पार्टी के हार का एक प्रमुख कारण रहा।

इन पार्टियों के गठन के कारणों में स्थानीय सामाजिक और आर्थिक कारकों का स्थान विशेष तौर पर प्रभावी रहा है। जैसे जातिगत आरक्षण की श्रेणी में बदलाव और नौकरी में विशेष आरक्षण की मांग। इन भावनात्मक मुद्दों पर ये पार्टियां अपने पीछे अपने समाज के लोगों को लामबंद कर लेती है और फिर बड़ी पार्टियों से सौदेबाजी करती है। और कुछ सीमा तक सफल भी होती है। हालांकि एक सच यह भी है कि इन मुद्दों को अधिकतर छोटी पार्टियां मुखौटे के रूप में प्रयोग करती है

और अपने छद्म हितों को पूरा करने में ही ध्यान देती है। शायद यही कारण है कि जल्द ही इन दलों से लोगों का मोह भंग भी हो जाता है। ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक भावनाओं में बदलाव के लिए ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नायकों से जुड़ाव की प्रवृत्ति एक अन्य कारण रहा है। जैसे सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी ऐतिहासिक नायक और राजा सुहेलदेव से अपने और अपनी पार्टी को जोड़ती रही है।

सारिणी सं0 3

विधानसभा चुनाव 2017 में शामिल पंजीकृत (गैर–मान्यता) दल

क्रम संख्या	राजनीतिक दल
1	Aadarsh Sangram Party
2	Aajad Bharat Party (Democratic)
3	Aam Janta Party (India)
4	Aapki Apni Party (Peoples)
5	Adarsh Samaj Party
6	Adarshwaadi Congress Party
7	Adhunik Bharat Party
8	Akhand Rashtrawadi Party
9	Akhand Samaj Party
10	Akhil Bharatiya Jan Sangh
11	Akhil Bhartiya Gondwana Party
12	Akhil Bhartiya Lok Dal
13	Akhil Bhartiya Navnirman Party
14	Al&Hind Party
15	All India Minorities Front
16	All India Peoples Front (Radical)
17	All Indian Rajiv Congress Party
18	Ambedkar Samaj Party
19	Ambedkar Yug Party
20	Andaman & Nicobar Janta Party
21	Annadata Party
22	Apna Dal (Soneylal)
23	Apna Dal United Party
24	Atulya Bharat Party
25	Awami Samta Party
26	Bahujan Awam Party
27	Bahujan Maha Party
28	Bahujan Mukti Party
29	Bahujan Nyay Dal
30	Bahujan Samyak Party (Mission)
31	Baliraja Party
32	Bharat Lok Sewak Party
33	Bharat Prabhat Party
34	Bharatiya Aavaam Ekta Party
35	Bharatiya Bahujan Parivartan Party
36	Bharatiya Bahujan Samta Party
37	Bharatiya Jan Kranti Dal (Democratic)
38	Bharatiya Kisan Parivartan Party
39	Bharatiya Majdoor Janta Party
40	Bharatiya Rashtravadi Samanta Party
41	Bharatiya Sampuran Krantikari Party
42	Bharatiya Samta Samaj Party
43	Bharatiya Sarvodaya Kranti Party
44	Bharatrashtra Democratic Party
45	Bhartiya Anarakshit Party
46	Bhartiya Bhaichara Party
47	Bhartiya Harit Party
48	Bhartiya Hind Fauj
49	Bhartiya Jan Nayak Party
50	Bhartiya Janta Dal
51	Bhartiya Kisan Party
52	Bhartiya Kisan Union Samaj Party
53	Bhartiya Krishak Dal
54	Bhartiya Lok Seva Dal
55	Bhartiya Lokmat Rashtrwadi Party
56	Bhartiya Manav Samaj Party
57	Bhartiya Naujawan Inklav Party
58	Bhartiya Navodaya Party
59	Bhartiya Nojawan Dal
60	Bhartiya Rashtriya Morcha
61	Bhartiya Republican Party (Insan)
62	Bhartiya Shakti Chetna Party
63	Bhartiya Vanchitsamaj Party
64	Bundelkhand Kranti Dal
65	Communist Party of India (Marxist&Leninist) Liberation
66	Communist Party of India (Marxist&Leninist) Red Star
67	Dr- Bhimrao Ambedkar Dal
68	Fauji Janta Party
69	Gondvana Gantantra Party
70	Hindusthan Nirman Dal
71	Hum Sabki Party
72	Indian Gandhiyan Party
73	Indian National League
74	Inqalab Vikas Dal
75	Jai Hind Samaj Party
76	Jan Adesh Akshuni Sena
77	Jan Adhikar Party
78	Jan Samman party
79	Jan Seva Sahayak Party
80	Jan Shakti Dal
81	Jan Shakti Ekta Party
82	Janata Congress
83	Janhit Bharat Party
84	Janhit Kisan Party
85	Jansatta Dal Loktantrik
86	Jansatta Party
87	Janta Kranti Party (Rashtravadi)
88	Janta Raj Party
89	Janvadi Party(Socialist)
90	Jwala Dal
91	Kalyankari Jantantrik Party
92	Kanshiram Bahujan Dal
93	Kartavya Rashtriya Party
94	Khusro Sena Party

95	Kisan Majdoor Berojgar Sangh
96	Kisan Mazdoor Sangharsh Party
97	Kisan Raksha Party
98	Lok Dal
99	Lok Gathbandhan Party
100	Lok Jan Sangharsh Party
101	Loktantrik Janshakti Party
102	Mahamukti Dal
103	Mahasankalp Janta Party
104	Majdoor Kisan Union Party
105	Manav Kranti Party
106	Manavtawadi Samaj Party
107	Manuvadi Party
108	Mazdoor Dalit Kisaan Mahila Gareeb Party (Hindustani)
109	Mera Adhikaar Rashtriya Dal
110	Minorities Democratic Party
111	Moulik Adhikar Party
112	Nagrik Ekta Party
113	Naitik Party
114	National Bhrashtachar Mukt Party
115	National Fifty&Fifty Front
116	National Lokmat Party
117	Nationalist Janshakti Party
118	Netaji Subhash Chander Bose Rashtriya Azad Party
119	Parivartan Samaj Party
120	Peace Party
121	Peoples Party of India (Democratic)
122	Pichhra Samaj Party
123	Pragatisheel Manav Samaj Party
124	Pragatisheel Samaj Party
125	Pragatishil Samajwadi Party (Lohia)
126	Prithviraj Janshakti Party
127	Purvanchal Mahapanchayat
128	Rashtravadi Party (Bharat)
129	Rashtrawadi Party of India]
130	Rashtrawadi Shramjeevi Dal
131	Rashtriya Ambedkar Dal
132	Rashtriya Apna Dal
133	Rashtriya Backward Party
134	Rashtriya Bharatiya Jan Jan Party
135	Rashtriya Garib Dal
136	Rashtriya Jan Adhikar Party (United)
137	Rashtriya Jan Gaurav Party
138	Rashtriya Janmat Party
139	Rashtriya Jansambhavna Party
140	Rashtriya Janta Party
141	Rashtriya Jantantrik Bharat Vikas Party
142	Rashtriya Janutthan Party
143	Rashtriya Janwadi Party (Socialist)
144	Rashtriya Kranti Party
145	Rashtriya Krantikari Samajwadi Party
146	Rashtriya Lok Sarvadhikar Party
147	Rashtriya Matadata Party
148	Rashtriya Mazdoor Ekta Party
149	Rashtriya Naujawan Dal
150	Rashtriya Samaj Paksha
151	Rashtriya Samanta Dal
152	Rashtriya Shoshit Samaj Party
153	Rashtriya Ulama Council
154	RASHTRIYA VIKLANG PARTY
155	Rashtriya Vyapari Party
156	Rastriya Insaaf Party
157	Republican Party of India
158	Republican Party of India
159	Right to Recall Party
160	Saaf Party
161	Sabhi Jan Party
162	Sabka Dal United
163	Sabse Achchhi Party
164	Sajag Samaj Party
165	Samagra Utthan Party
166	Samajwadi Samaj Party
167	Samdarshi Samaj Party
168	Samrat Ashok Sena Party
169	Sanatan Sanskriti Raksha Dal
170	Sanyukt Vikas Party
171	Sarvjan Lok Shakti Party
172	Sarvodaya Bharat Party
173	Sarvshreshth Dal
174	Satya Bahumat Party
175	Satya Kranti Party
176	Shane Hind Fourm
177	Socialist Party ¼India½
178	SOCIALIST UNITY CENTRE OF INDIA (COMMUNIST)
179	Subhashwadi Bhartiya Samajwadi Party (Subhas Party)
180	Suheldev Bharatiya Samaj Party
181	Swatantra Jantaraj Party
182	United Democratic Front Secular
183	VANCHIT SAMAJ INSAAF PARTY
184	Vikas Insaf Party
185	Vishwa Manav Samaj Kalyan Parishad
186	Voters Party International
187	Yuva Vikas Party

स्रोत भारतीय चुनाव आयोग का वेबसाईट

छोटे और सीमांत दल का अध्ययन क्यों

2007 और 2012 विधानसभा के चुनाव और 2014 और 2019 के लोकसभा के चुनावों में इनके प्रदर्शन और प्रभाव को देखते हुए इन दलों का गंभीर अध्ययन जरूरी हो गया है। विशेषकर तब जब एक समय की छोटी पार्टियां माने जानी वाली 'समाजवादी पार्टी' और 'बहुजन समाज पार्टी' ने अकेले दम पर सत्ता हासिल करके इस मिथक को तोड़ दिया। हालांकि चुनावों में अपने प्रदर्शन के बल पर इन दलों को क्रमशः राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता मिल चुकी है।

2014 के लोकसभा चुनाव में अमित भाई शाह के चुनावी प्रबंधन में भाजपा ने 80 में से 71 सीटो पर विजय एक अलग ही विश्लेषण की ओर ध्यान देने के लिए बाध्य कर दिया। क्योंकि इसके पहले के चुनावों में भाजपा को उम्मीद नहीं थी कि इतनी जबरदस्त सफलता मिलेगी। ऐसा क्यों हुआ? भाजपा ने इस चुनाव में छोटी–छोटी पार्टियों के साथ गठबंधन किया। अपना दल के साथ साझेदारी करके भाजपा ने यह सफलता पायी। तब यह पहली बार हुआ कि किसी राष्ट्रीय पार्टी ने छोटे–छोटे दल के साथ साझा चुनाव लड़ा। इससे इन दलों को महत्व मिला। इन सब कारणों से यह जरूरी हो गया कि इन दलों के कार्यप्रणाली को समझा जाये।

छोटे और सीमांत दल का चुनावी प्रदर्शन

अब सवाल यह है कि क्या सभी छोटे और सीमांत दल सचमुच सक्रिय भूमिका निभाते है या कुछ ही दल इसमें कामयाब होता है? उत्तर प्रदेश में संपन्न 2012 और 2017 के विधानसभा और 2014 तथा 2019 के लोकसभा के चुनावों के आंकड़ों से कुछ अलग ही तस्वीर निकलती है। इन आकड़ों से एक बात यह सामने आती है कि चुनाव में भाग लेने वाली पार्टियों की संख्या बहुत ही ज्यादा है लेकिन इनमें से मात्र चार या पांच पार्टियां ही ऐसी सामने आई जिसने 50 हजार से अधिक मत प्राप्त किए। अधिकतर दलों के मत दस हजार से भी नीचे ही रहे। चौंकाने वाली बात यह है कि इनमें से कई दलों के मत तो एक हजार से भी कम रहे। तब यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या सचमुच इन दलों का राजनीति पर प्रभाव पड़ता है? (टेबुल 4,5 और 6)।

एक और सवाल यह है कि इन दलों का अकेले में प्रदर्शन उतना प्रभावी नहीं हो पाता है जितना राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय दलों के साथ गठबंधन में होता है। यह अपना दल और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रदर्शन के आधार पर सामने आती है। क्यों कि इन दलों का प्रदर्शन उतना प्रभावी नहीं रहा था जब अकेले चुनाव लड़ रही थी और न ही सत्ता की राजनीति में असर था। इस परिप्रेक्ष्य में तब यह जानना जरूरी हो जाता है कि इन दलों का गठन क्यों होता है? और इन दलों का सामाजिक आधार क्या है? क्या राष्ट्रीय दल इनका उपयोग अपने सामाजिक आधार को मजबूत करने में करते है? भारत जैसे देश में इतनी ज्यादा संख्या में राजनीतिक दलों का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, जहां विभिन्नता के कई रूप देखने को मिलते हैं लेकिन लोकतंत्र के दृष्टिकोण से कभी–कभी यह मतदाताओं में भ्रम भी उत्पन्न करता है। इन दलों में बहुतायत तो चुनावों के समय ही गठित होते हैं और उसके बाद राजनीतिक रूप से अदृश्य हो जाते हैं। इनकी सत्ता में भूमिका भी नाममात्र की ही रही है। लेकिन 2012 के बाद से कुछ सीमांत और छोटे दलों की उत्तर प्रदेश की चुनावी राजनीति और सत्ता में प्रभावशाली भूमिका देखने में आयी है। भाजपा जैसी बड़ी पार्टियां तो इन दलों के सहारे ही अपने आधार को मजबूत करने में कामयाब रही है। इन्हीं बातों का प्रभाव रहा है कि 2022 में आगामी विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखकर समाजवादी पार्टी भी भाजपा के नक्शे कदम पर चलकर छोटे और सीमांत दलों के साथ साझेदारी को तरजीह दे रही है। ऐसा कई राज्यों में देखने में आ रही है जब कथित तौर पर बड़ी पार्टियां छोटे और सीमांत दलों के साथ साझेदारी को वरीयता दे रही है। इसका क्या कारण है? यह तो शोध का विषय है। लेकिन सीमित और कुछेक क्षेत्रों में प्रभावी होने के बावजूद सत्ता और राजनीति में इनकी भूमिका इतनी महत्वपूर्ण होते जा रही है।

इस तथ्य का दूसरा पहलू भी अत्यंत रोचक है कि छोटे और सीमांत दल अकेले दम पर सत्ता प्राप्त नहीं कर सकते लेकिन बदली परिस्थितियों में कोई भी बड़ा दल इन दलों को नजरअंदाज करके सत्ता प्राप्त नहीं कर सकता है। ऐसे दल मतदाताओं में नजरिया बनाने या बिगाड़ने का काम करते हैं। शायद यही कारण है कि कोई भी बड़ा दल इनसे नाराजगी मोल लेने का जोखिम नहीं लेना चाहती। बड़े दलों के लिए भी अच्छा होता है कि एक दो सीटें देकर अपने सामाजिक आधार को मजबूती देती है। 2014 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश के 80 लोकसभा सीटों में से 78 सीटों पर स्वयं और 2 सीटों पर अपना दल को देकर जबरदस्त प्रदर्शन किया था। इसी प्रकार से 2017 के विधानसभा चुनाव में अपना दल और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के साथ साझेदारी कर 300 से ज्यादा सीटों पर जीत हासिल की थी।

सारिणी 04 उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2012 में विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दलों का प्राप्त मत

क्रम	दल के प्रकार	संख्या	प्राप्त मत < 1000	10000< प्राप्त मत >1000	50000<प्राप्त मत >10000	प्राप्त मत>50000
1	राष्ट्रीय दल	6	––	––	––	6
2	राज्य स्तरीय दल	13	––	6	2	5
3	पंजीकृत दल	203	60	96	29	18

स्रोत भारतीय चुनाव आयोग का वेबसाईट

सारिणी सं05 उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2017 में विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दलों का प्राप्त मत

क्रम	दल के प्रकार	संख्या	प्राप्त मत < 1000	10000< प्राप्त मत >1000	50000<प्राप्त मत >10000	प्राप्त मत>50000
1	राष्ट्रीय दल	6	––	––	2	4

2	राज्य स्तरीय दल	7	––	3	––	4
3	पंजीकृत दल	289	135	127	16	12

स्रोत भारतीय चुनाव आयोग का वेबसाईट

सारिणी सं0 6 उत्तर प्रदेश लोकसभा चुनाव 2019 में विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दलों का प्राप्त मत

क्रम	दल के प्रकार	संख्या	प्राप्त मत < 1000	10000< प्राप्त मत >1000	50000<प्राप्त मत >10000	प्राप्त मत>50000
1	राष्ट्रीय दल	5	––	1	–––	4
2	राज्य स्तरीय दल	6	––	2	2	2
3	पंजीकृत दल	188	30	128	26	4

स्रोत भारतीय चुनाव आयोग का वेबसाईट

छोटे और सीमांत दल का राजनीति पर प्रभाव

छोटे और सीमांत दलो का चुनावी प्रदर्शन कैसा भी रहा हो लेकिन वर्तमान उत्तर प्रदेश की राजनीति में इन दलों की अहम भूमिका है। शायद यही कारण है कि आगामी विधानसभा चुनाव 2022 को लेकर सभी प्रमुख पार्टियां छोटे–छोटे दलों को तरजीह दे रहे हैं। कोई भी दल इनकी नाराजगी का जोखिम नहीं लेना चाहती। चाहे समाजवादी पार्टी हो या भारतीय जनता पार्टी। चुनाव के बाद सत्ता की राजनीति में भी इन दलों के नेताओं की भूमिका रही है। 2017 के जीत के बाद सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के श्री ओम प्रकाश राजभर को मंत्री परिषद में प्रमुख स्थान दिया गया। इसी प्रकार से अपना दल के आशीष पटेल को मंत्री बनाया गया। अनुप्रिया सिंह पटेल को केन्द्र में राज्य मंत्री का पद दिया गया।

सरकार में इन दलो के नेताओं की अहम भूमिका मिलना इस बात का द्योतक है कि मुख्य पार्टियां भी इन्हें महत्व देने लगी है। भाजपा ने इस बात को जल्दी समझा और सफलता भी पाई। समाजवादी पार्टी भी इसी रणनीति पर कार्य करते हुए छोटी–छोटी पार्टियों के साथ गठबंधन को महत्व देकर अपने वोट को बढ़ाने का प्रयास कर रही है। यह तो चुनाव परिणाम ही तय करेगा कि इसमें कितनी सफलता मिलेगी। लेकिन एक बात तो तय है कि छोटी पार्टियों के साथ गठबंधन से मत अंतरण में सफलता की गुंजाइश अधिक रहती है जिसकी पुष्टि 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव तथा 2017 के विधानसभा चुनाव के नतीजे करते हैं।

इन तथ्यों के बावजूद यह भी उल्लेखनीय है कि अधिकतर छोटी पार्टियों के मत दस हजार से कम ही रहे। इनमें से एक हजार से कम मत पाने वाली पार्टियों की संख्या भी अच्छी खासी है। तब यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या इतनी ज्यादा संख्या में दलों का होना मतदाताओं को भ्रमित करता है या उनके हितों को साधने में सफल होता है?

बड़ी पार्टियों के दृष्टिकोण से छोटी पार्टियों के साथ गठबंधन तो फायदे का ही रहा है। बहु–दलीय व्यवस्था में जहां हार–जीत का अंतर बहुत ही कम होता है उस स्थिति में छोटी पार्टियों का मत मायने रखता है।

सन्दर्भ

गाबा, ओ पी, (2020)*राजनीति–सिद्धांत की रूपरेखा,* नई दिल्ली, नेशनल पेपरबैक्स,

फाडिया, बाबुलाल, (1984) *स्टेट पॉलिटिक्स इन इंडिया,* रेडियंट पब्लिशर्स

नारंग, ए एस,(2004) *भारतीय शासन और राजनीति,* नई दिल्ली, गीतांजली पब्लिशिंग हाउस,

भुयम,दशरथि, (2007) *रोल ऑफ रीजनल पोलिटिकल पार्टी इन इंडिया,* नई दिल्ली मित्तल पब्लिकेशन

वर्मा, ए के,(*2005*) बैकवर्ड कास्ट पॉलिटिक्स इन उत्तर प्रदेश, *इकॉनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली,* (वॉल्यूम–40), सितम्बर

वर्मा, ए के, (*2004)*उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी, *इकॉनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली,* (वॉल्यूम–39), अप्रैल

वर्मा, ए के,(2017) मोदी संग योगी की भी परीक्षा , *दैनिक जागरण,* 20 मार्च 2017

वर्मा, ए के, (2016) समाजवादी विघटन का अध्याय, *दैनिक जागरण,* 24 सितम्बर 2016

कुमार, संजय, (2021) उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022: भारतीय राजनीति के तूफानी भंवर में, *जनता जनार्दन,* 02 अगस्त 2021

कुमार, संजय,(2021) उत्तर प्रदेश में बदलते राजनीतिक समीकरण–एक विश्लेषण, *जनता जनार्दन,* 14 जून 2021

www.eci.in